जनसत्ता

नगर नई दिल्ली : बुधवार ९ फरवरी, २००० रु. २.०० (१० पेज) दिल्ली, चंडीगढ़, मुंबई और कलकत्ता से प्रकाशित

कैंसर के इलाज में करिश्माई कामयाबी

आत्मदीप

भारती य जड़ी-बूटियां कैंसर जैसे जानलेवा रोग से निपटने में सक्षम हैं। राजस्थान के आयुर्वेदिक चिकित्सक नंदलाल तिवारी ने इसे साबित कर दिखाया है। उन्होंने असम, दार्जिलिंग व महाराष्ट्र में लगातार १८ बरसों तक वनस्पतियों पर अनुसंधान कर 'कर्कटोल' नामक यौगिक बनाया है। आठ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के इस मिश्रण से वे मौत की ओर बढ़ रहे कई कैंसर रोगियों को नई जिंदगी देने में सफल हुए हैं। पर उनकी इस चमत्कारिक सफलता का केंद्र व राज्य सरकार ने कोई नोटिस नहीं लिया है। वैसे विदेशों में उनकी पूछ बढ़ती जा रही है।

डा. तिवारी का तैयार किया यौगिक सिर्फ एसाईटिस कैंसर में बेअसर सिद्ध हुआ है। यहां मालवीय नगर में अपने घर में ही कैंसर पीड़ितों को जीवन दान दे रहे ६० साल के डा. तिवारी बीते २० साल में सैकड़ों रोगियों को कैंसर से निजात दिला चुके हैं। रोग मुक्त हुए लोग और उनकी जांच रपटें इसकी पुष्टि करती हैं।

अमेरिका व ब्रिटेन के कुछ प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों ने भी डा. तिवारी को मरीज 'रेफर' किए हैं। कैंसर के इलाज में डा. तिवारी की उपलब्धियों से प्रभावित होकर लंदन की एक सामाजिक संस्था ने एक फिल्म बनाई है। ब्रिटेन के एशिया टीवी ने उनका आधे घंटे का इंटरव्यू प्रसारित किया है। वे उपचार के लिए कई इंग्लैंड, जर्मनी, बेल्जियम, देशों का दौरा कर चुके हैं। मुंबई के टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल, व कुछ अन्य भारतीय अस्पतालों के डाक्टरों ने भी डा. तिवारी के पास असाध्य कैंसर रोगी भेजे हैं। देश-विदेश के कई मरीज 'कर्कटोल' से ठीक हुए हैं। टाटा कैंसर अस्पताल के एक कैंसरग्रस्त डाक्टर को भी इलाज के लिए यहां भेजा गया है।

डा. तिवारी अपनी दवा से सभी मरीजों के ठीक होने का दावा नहीं करते। उन्होंने बताया कि उनके पास ९० फीसदी मरीज ऐसे आते हैं जिन्हें हर तरह के लंबे व खर्चीले इलाज के बाद अस्पतालों से जवाब दे दिया जाता है। फिर भी उनमें से १० से ३० फीसदी मरीजों को उनकी दवा से सौ फीसदी और ३० से ४५ फीसदी रोगियों को काफी लाभ मिला है। अंतिम अवस्था के कैंसर में प्रचलित एलोपैथिक चिकित्सा से ५ से १० फीसदी मरीज़ों को ही लाभ हो पाता है। ऐसे में डा. तिवाड़ी की सफलता (पांच से दस) का आंकड़ा बहुत मायने रखता है। कैंसर की दूसरी अवस्था (सैकंड स्टेज) वाले रोगियों में अपनी सफलता की दर ४५ से ५० फीसदी बताते हुए वे दावा करते हैं कि उनकी दवा प्रारंभिक अवस्था वाले (८० फीसदी) मरीजों को पूरी तरह चंगा करने की क्षमता रखती है। देश-विदेश की प्रयोगशालाओं में किए गए परीक्षणों में यह दवा मानव शरीर के लिए निरापद (निर्दोष, दुष्प्रभाव रहित) पाई गई है।

इन परीक्षणों की रपटों के साथ डा. तिवारी के पास कई मरीज़ों की जांच रपटें भी मौजूद हैं। इनमें ऐसी रपटें शामिल हैं जिनमें जिन प्रयोगशालाओं ने जिन मरीज़ों में कैंसर होना प्रमाणित किया था, उन्हीं प्रयोगशालाओं ने डा. तिवारी के इलाज के बाद जांच कर रह उन्हीं मरीज़ों में कैंसर का प्रभाव शून्य बताया है। १९७९ से कैंसर का लाज़ कर रहे डा. तिवारी ठीक हो चुके कई मरीजों का रेकार्ड जला चुके हैं। क्योंकि उनके पास उसे रखने की जगह नहीं है। १९८५ से ९० तक के रिकार्ड के आधार पर जुटाए उनके आंकड़े बताते हैं कि इस अरसे में उन्होंने ९७७ रोगियों का इलाज किया। उनमें भोजन नली के कैंसर के ४२९, स्तन कैंसर के २०८, गर्भाशय के कैंसर के १७८ ब्लड कैंसर के १६२ रोगी थे। भोजन नली के कैंसर रोगियों में से २८ फीसदी को सौ फीसदी फायदा हुआ, २७ फीसदी को काफी लाभ मिला जबकि ४५ फीसदी को फायदा नहीं हुआ।